



वैदिक ज्योतिष (Jyotish) में, विवाह में देरी (विलंब) और विवाह न होने (विवाह अभाव) के बीच एक महत्वपूर्ण विश्लेषणात्मक अंतर होता है। जहां देरी आमतौर पर शनि की स्थिर और प्रतिबंधात्मक दृष्टि के कारण होती है, वहीं विवाह का पूरी तरह से न होना तब घटित होता है जब साझेदारी, कानूनी बंधन और भावनात्मक इच्छा के कारक ग्रह किसी भी शुभ प्रभाव के बिना पूरी तरह से पीड़ित या कमजोर हो जाते हैं।

जब किसी कुंडली में विवाह अभाव दिखाई देता है, तो जातक के भीतर या तो विवाह के प्रति कोई गहरा अवचेतन झुकाव नहीं होता है, वह पूर्ण व्यक्तिगत स्वतंत्रता/अध्यात्म को प्राथमिकता देता है, या फिर जब भी विवाह का प्रयास किया जाता है तो उसके सामने न सुलझने वाली बाधाएं आ जाती हैं।

1. D1 और D9 में सप्तमेश की पीड़ा

सप्तम भाव का स्वामी (सप्तमेश) औपचारिक साझेदारी का प्रत्यक्ष आधार होता है। जब यह अशुभ भावों में चला जाता है और पाप ग्रहों से पीड़ित होता है, तो विवाह की नींव डगमगाने लगती है:

• **लग्न कुंडली (D1) का सप्तमेश दुस्थान में पाप ग्रहों से पीड़ित:** सप्तमेश का छठे भाव (ऋण, विवाद, मुकदमेबाजी), आठवें भाव (गंभीर संकट, अचानक अलगाव), या बारहवें भाव (हानि, अकेलापन) में स्थित होना, और साथ ही नैसर्गिक पाप ग्रहों (मंगल, शनि, राहु, केतु, सूर्य) की दृष्टि या युति से प्रभावित होना।

• **नवांश कुंडली (D9) का सप्तमेश दुस्थान में पाप ग्रहों से पीड़ित:** नवांश कुंडली साझेदारी के फल और भाग्य को दर्शाती है। यदि D9 कुंडली का सप्तमेश D9 के छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो और पाप ग्रहों से पीड़ित हो, तो आत्मिक स्तर पर विवाह को बनाए रखने की कार्मिक क्षमता बहुत कम हो जाती है।

2. शुक्र (मिलन के कारक) का पूर्ण रूप से पीड़ित होना

शुक्र (Shukra) प्रेम करने, समझौता करने और जीवनसाथी को आकर्षित करने की व्यक्तिगत क्षमता का प्रतिनिधित्व करता है। शुक्र के अत्यधिक दूषित होने से वैवाहिक और प्रेम जीवन का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है:

• **नीच का शुक्र (Neecha Shukra):** शुक्र का अपनी नीच राशि (कन्या / Kanya) में स्थित होना, जहाँ अत्यधिक नुक्ताचीनी, पूर्णतावाद (perfectionism) या संशयवाद भावनात्मक जुड़ाव पर हावी हो जाता है।

• **दुस्थान भावों में स्थित शुक्र:** शुक्र का छठे, आठवें या बारहवें भाव में होना, विशेष रूप से जब उस पर शुभ ग्रहों का प्रभाव न हो। छठे भाव में यह संघर्ष पैदा करता है; आठवें में अचानक भावनात्मक आघात; और बारहवें भाव में (यदि पीड़ित हो), तो अत्यधिक निर्भरता या अलगाव लाता है।

- **पाप ग्रहों से पीड़ित शुक्र:** शनि, मंगल, राहु या केतु जैसे क्रूर पाप ग्रहों के साथ शुक्र की युति होना।
- शनि के साथ युति आकर्षण व इच्छाओं को धीमा करती है और कठोर बाधाएँ खड़ी करती है।
- मंगल के साथ युति तीव्र टकराव, कलह और अहंकार की लड़ाई पैदा करती है।
- राहु के साथ युति अप्रत्याशित, मर्यादा तोड़ने वाले भ्रम या अवास्तविक अपेक्षाएँ पैदा करती है।
- केतु के साथ युति उदासीनता, भावनात्मक अलगाव और विरक्ति को जन्म देती है।

• **सूर्य बनाम शुक्र का असंतुलन:** शुक्र पर सूर्य का अत्यधिक प्रभाव अत्यधिक अहंकार के कारण ग्रह की कोमलता को नष्ट कर देता है, जबकि अत्यधिक पीड़ित शुक्र अस्वस्थ निर्भरता उत्पन्न करता है, जिससे रिश्तों में बार-बार अलगाव की स्थिति बनती है।

3. केतु का प्रभाव: वैराग्य का ग्रह

केतु स्वाभाविक मोक्ष कारक है - जो आध्यात्मिक मुक्ति और अनासक्ति का प्रतीक है। इसकी सांसारिक समझौतों या पारंपरिक पारिवारिक व्यवस्थाओं में कोई रुचि नहीं होती:

- **सप्तम भाव में केतु:** विवाह के भाव में अकेले या अत्यधिक प्रभावी स्थिति में स्थित होने पर, केतु निरंतर अरुचि, भावनात्मक अलगाव या यह भावना पैदा करता है कि वैवाहिक साझेदारी मूल रूप से अनावश्यक है।

- **सप्तमेश या जन्म कुंडली के शुक्र के साथ केतु की युति:** जब केतु सप्तम भाव के स्वामी से जुड़ता है या शुक्र को स्पर्श करता है, तो यह सांसारिक प्रेम के कार्मिक बंधनों को शिथिल कर देता है, जिससे जातक की आंतरिक ऊर्जा आध्यात्मिक स्वायत्तता, एकांत अनुसंधान या संन्यासी जैसे वैराग्य की ओर निर्देशित होती है।

4. शनि और राहु की युति/गठजोड़

जब दो सबसे शक्तिशाली विघटनकारी कर्म कारक ग्रह वैवाहिक अक्ष पर अपना प्रभाव डालते हैं, तो विवाह संपन्न होने में संघर्ष होता है:

- **7वें भाव, 7वें भाव के स्वामी (सप्तमेश), या शुक्र पर संयुक्त प्रभाव:** जब शनि (ठहराव, भय, कर्तव्य) और राहु (अव्यवस्था, जुनून, अचानक व्यवधान) दोनों संयुक्त रूप से 7वें भाव पर दृष्टि डालते हैं या उसमें स्थित होते हैं, 7वें भाव के स्वामी के साथ युति करते हैं या शुक्र को पीड़ित करते हैं, तो रिश्तों का अक्ष भय और उथल-पुथल की जकड़ में आ जाता है।

5. पीड़ित या नीच का बृहस्पति

बृहस्पति (गुरु) दिव्य रक्षक, भाग्य (कृपा) के प्रदाता और एक महिला की कुंडली में पति के प्राथमिक कारक हैं:

- **मकर (Makara) में नीच का बृहस्पति:** जब बृहस्पति बिना नीच भंग (Neecha Bhanga) के मकर राशि में अपना बल खो देता है, तो कुंडली पर उसका सुरक्षात्मक प्रभाव कमजोर हो जाता है।

- **दुस्थान (6ठे, 8वें या 12वें भाव) में बृहस्पति:** बृहस्पति का 6ठे, 8वें या 12वें भाव में स्थित होना दीर्घकालिक संबंधों को आशीर्वाद देने, धार्मिक अनुष्ठानों को औपचारिक रूप देने या एक सहयोगी जीवनसाथी प्रदान करने की उसकी स्वाभाविक क्षमता को कमजोर करता है।

निदानात्मक चेकलिस्ट: विलंब बनाम पूर्ण अभाव (विवाह न होना)

यह निष्कर्ष निकालने से पहले कि किसी कुंडली में विवाह का योग ही नहीं है, सुनिश्चित करें कि निम्नलिखित बिंदुओं की जांच कर ली गई है:

1. संचयी पीड़ा (क्युमुलेटिव अप्पिलक्शन) का नियम: कोई एक अकेला योग (जैसे कि केवल 7वें भाव में केतु होना या केवल कन्या राशि में शुक्र होना) विलंब, उच्च मानकों या गैर-पारंपरिक विवाह का संकेत देता है, न कि विवाह के पूर्ण अभाव का। विवाह का पूरी तरह से न होना तभी संभव है जब D1 (लग्न) और D9 (नवांश) दोनों में उपरोक्त में से कम से कम 3 से 4 कारक एक साथ सक्रिय हों।

2. शुभ ग्रहों की राहत देखें: किसी पीड़ित-रहित (शुभ) गुरु या अच्छी स्थिति में बैठे बुध की 7वें भाव या 7वें भाव के स्वामी पर पड़ने वाली कोई भी सीधी दृष्टि विवाह न होने के योग को तोड़ सकती है और इसे विलंबित, गैर-पारंपरिक या आध्यात्मिक दृष्टिकोण वाले विवाह में बदल सकती है।

3. दशा अवधि की जांच करें: यदि विवाह योग्य प्रमुख वर्ष (22 से 45 वर्ष की आयु) पूरी तरह से केतु, 6वें भाव के स्वामी या 8वें भाव के स्वामी की महादशाओं के प्रभाव में हैं और शुक्र या 7वें भाव के स्वामी का कोई अंतर्दशा सहयोग नहीं मिल रहा है, तो विवाह का वास्तविक रूप से संपन्न होना प्रभावी रूप से टल जाता है।